कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



चर्चा करें

6. कल्पना कीजिए कि आप कैरीबियाई क्षेत्र में काम करने वाले गिरमिटिया मजदूर हैं। इस अध्याय में दिये गये विवरणों के आधार पर अपने हालात और अपनी भावनाओं का वर्णन करते हुए अपने परिवार के नाम पर एक पत्र लिखो।

उत्तर : अध्याय में दिये गये विवरणों के आधार पर अनुबंधित या गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति :-

1. दूर देशों में ले जाया जाना
2. अनुबंध/एग्रीमेंट
3. मुख्य अनुबंध
4. एजेंटों द्वारा भर्ती
5. उत्पीड़न या गरीबी के कारण अनुबंध
6. एजेंटों द्वारा झूठी जानकारी देना
7. लम्बी समुद्री यात्रा
8. एजेंटों द्वारा श्रमिकों का अपहरण
9. कार्यस्थल पर विपरीत हालात
10. जीवन व कार्यस्थितियां कठोर व कोई कानूनी अधिकार भी नहीं।
11. श्रमिकों का जंगलों में भाग जाना
12. कार्य पूरा न होने पर कठोर सजा
13. संतोषजनक कार्य न होने पर वेतन में कटौती
14. श्रमिकों का वहीं बस जाना।

आदरणीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श।

- आपकी इच्छानुसार एवं गाँव में उत्पीड़न एवं गरीबी के कारण मैंने एजेंट के अनुबंधों को मान लिया था।
- लेकिन एजेंट ने हमें जो जानकारी दी थी वे सब झूठी थी।
- नई जगह पर काम व जीवन के हालात अलग ही हैं। ये बहुत कठोर हैं।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- मुझे तो यह भी नहीं बताया गया था कि यहां लम्बी समुद्री यात्रा करके आना है।
- यहां पहुंचने के बाद पता चला है कि जैसी उम्मीद थी वैसे हालात यहां नहीं हैं।
- यहां जीवन एवं कार्यस्थितियाँ बहुत कठोर हैं तथा यहाँ मजदूरों के लिए कोई कानूनी अधिकार भी नहीं है।
- तमाम कोशिशों के बावजूद मैं उन कार्यों को ठीक से नहीं कर पाता हूं जो मुझे सौंपे जाते हैं।
- काम पूरा न होने पर मुझे कई बार यहाँ सजा के रूप में जेल काटनी पड़ती हैँ।
- यदि काम संतोषजनक ढंग से पूरा नहीं हुआ तो तनख्वाह भी काट ली जाती है।
- यहां यदि कोई मजदूर, जंगलों मे भाग जाता है तो उसे पकड़कर कठोर दण्ड दिया जाता है।
- मजदूरों को यहां अनुबंध की अवधि में भारी कठिनाइयों एवं कष्टों का सामना करना पड़ता है।
- जैसा कि आप सभी को पता है कि मेरा यह अनुबंध 5 वर्ष का है इसकी समाप्ति के बाद मैं घर लौटने की पूरी कोशिश करूंगा।
- घर के सभी बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को हार्दिक स्नेह एवं प्यार।

आपका पुत्र
कखग

7 . अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमयों में तीन तरह की गतियों या प्रवाहों की व्याख्या करें। तीनों गतियों के भारत और भारतीयों से संबंधित एक एक उदाहरण दें और उनके बारे में संक्षेप में लिखें।

उत्तर : अर्थशास्त्रियों ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय में 3 तरह की गतियों या प्रवाहों का उल्लेख किया है। ये प्रवाह निम्नलिखित हैं –

1. व्यापार 2. श्रम 3. पूंजी

1. व्यापार का प्रवाह :– पहला प्रवाह व्यापार का होता है। यह 19वीं शताब्दी में मुख्य रूप से वस्तुओं के व्यापार तक ही सीमित था।

जैसे – कपड़ा या गेहूं आदि।

उदाहरण – भारत से गेहूं तथा कच्चा कपास यूरोपीय देशों को निर्यात किया जाता था।

- कपड़ों की रंगाई के काम आने वाली नील का भी कई दशकों तक निर्यात होता रहा।
- 1820 के दशक से चीन को बड़ी मात्रा में अफीम का निर्यात किया जाता था।

2. श्रम का प्रवाह :–

- दूसरा प्रवाह श्रम का है।
- इसमें लोग काम या रोजगार की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं।

उदाहरण :–

- 19वीं सदी में भारत के लाखों मजदूरों को बागानों, खदानों और सड़क व रेलवे निर्माण परियोजनाओं में काम करने के लिए दूर देशों में ले जाते थे।
- भारतीय श्रमिकों को कैरेबियन द्वीप समूह (त्रिनिदाद, गुयाना, सूरीनाम), मॉरीशस व फिजी ले जाया जाता था।
- तमिल आप्रवासी सीलोन और मलाया जाकर काम करते थे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Cyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- बहुत सारे श्रमिकों को असम के चाय बागानों में काम करवाने ले जाते थे।

3. पूंजी का प्रवाह :-

- तीसरा प्रवाह पूंजी का होता है।
- इसमें पूंजी को अल्प या दीर्घ अवधि के लिए दूर-दराज के इलाकों में निवेश किया जाता है।

उदाहरण :-

- शिकारीपूरी श्रॉफ और नट्टूकोट्टई चेट्टियार बैंकर तथा व्यापारी थे।
- ये मध्य एवं दक्षिण पूर्वी ऐशिया में निर्यात की जाने वाले खेती के लिए कर्जे देते थे।
- इसके लिए या तो वे अपनी जेब से पैसा लगाते थे या यूरोपीय बैंकों से कर्जे लेते थे।
- उनके पास दूर-दूर तक पैसे पहुंचाने की एक व्यवस्थित पद्धति होती थी।
- इसके लिए उन्होंने देशी स्वरूप के व्यवसायिक संगठन विकसित कर लिये थे।

8. महामंदी के कारणों की व्याख्या करें-

उत्तर : आर्थिक महामंदी की शुरूआत 1929 से हुई और यह संकट 1930 के दशक के मध्य तक बना रहा।

महामंदी के 2 प्रमुख कारण थे -

1. कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन :-

- कृषि उत्पादों के अधिक उत्पादन से उनकी कीमतें गिरने लगीं थीं जिसके कारण स्थिति खराब हो गई।
- कीमतें गिरने लगीं तो किसानों की आय घटने लगी।
- अपनी आय बढ़ाने के लिए किसान और उत्पादन बढ़ाने का प्रयास करने लगे जिससे ज्यादा माल से वे अपना आय स्तर बनाये रख सकें।
- इससे बाजार में कृषि उत्पादों की आमद और बढ़ गई और फिर कीमतें और नीचे चली गयी।
- खरीदारों के अभाव में कृषि उपज पड़ी-पड़ी सड़ने लगी।

2. अमेरिकी ऋणों में कमी :-

- 1920 के दशक में बहुत सारे देशों ने अमेरिका से कर्जे लेकर अपनी जरूरतों को पूरा किया था।
- जब हालात अच्छे थे तो अमेरिका कर्जे देता रहा लेकिन संकट का संकेत मिलते ही अमेरिकी उद्यमियों के होश उड़ गये।
- उसने कर्जे देना बंद करके कर्ज वसूली प्रारम्भ कर दी।
- 1928 के प्रथम छमाही में विदेशों में अमेरिका का कर्जा 1 अरब डालर था जो साल के अंत तक घटकर केवल चौथाई रह गया था।
- जो देश अमेरिकी कर्जे पर सबसे ज्यादा निर्भर थे उनके सामने संकट आ खड़ा हुआ।

9. जी-77 देशों से आप क्या समझते हैं? जी-77 को किस आधार पर ब्रेटन-वुड्स की जुडवां संतानो की प्रतिक्रिया कहा जा सकता है? व्याख्या करें।

उत्तर : जी-77 विकासशील देशों का संगठन है।

- 1950 व 1960 के दशक में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं ने तेज प्रगति की थी लेकिन विकासशील देशों को कोई लाभ नहीं हुआ।

Download App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इस समस्या के कारण उन्होंने एक
''नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली'' की स्थापना पर बल दिया। [New International Economic Order - N.I.E.O.]
- ब्रेटन-वुड्स की जुड़वाँ संतानें
युद्धों के बाद अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था बनाये रखने का उद्देश्य रखा गया।
इसके अर्न्तगत औद्योगिक विश्व ने अपने 2 लक्ष्य निर्धारित किये -
1. आर्थिक स्थिरता तथा
2. पूर्ण रोजगार बनाये रखना
- इसके लिए - जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू-हैम्पशर में ब्रेटन-वुड्स नामक स्थान पर -
'संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन' का आयोजन किया गया।
- इस सम्मेलन में 2 संस्थाओं की स्थापना की गई।
- सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ या हानि से निपटारा करने के लिए -
'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' (I.M.F.) की स्थापना की गई। (International Monetary Fund)
- युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए पैसे के इंतजाम के लिए -
'अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक' अथवा 'विश्व बैंक' का गठन किया गया।
- इन I.M.F. तथा विश्व बैंक को
'ब्रेटन-वुड्ज संस्थान' या
'ब्रेटन-वुड्ज टिवन' भी कहा जाता है।
- I.M.F. एवं विश्व बैंक का गठन तो औद्योगिक देशों की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया गया।
- 1950 के दशक के अंत में जाकर I.M.F. तथा विश्व बैंक ने विकासशील देशों पर ध्यान देना प्रारम्भ किया।
- लेकिन ये संस्थाऐं तो उन्हीं औपनिवेशिक शक्तियों के अधीन थीं जिन्होंने इन्हीं विकासशील देशों को उपनिवेश बना रखा था।
- बहुत साल बीत जाने के बाद भी बहुत सारे नव-स्वाधीन राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं पर अब भी औपनिवेशिक शक्तियों का नियंत्रण था।
- जो देश ब्रिटेन ओर फ्रांस के उपनिवेश रह चुके थे वहां पर अब भी उनके महत्वपूर्ण संसाधनों जैसे खनिज संपदा पर ब्रिटेन और फ्रांस की कंपनियों का ही नियंत्रण था ओर वे इस नियंत्रण को छोड़ने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार नहीं थे।
- अमेरिका की बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी विकासशील देशों के प्राकृतिक संसाधनों का बहुत कम कीमत पर दोहन कर रही थीं।
- अत: N.I.E.O. के द्वारा ये विकासशील देशों के मांगें थीं:-
1. वे अपने संसाधनों पर सही मायनों में नियंत्रण चाहते थे।
2. उन्हें विकास के लिए अधिक सहायता मिले।
कच्चे माल के सही दाम मिले।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें - Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

3. तैयार मालों को विकसित देशों के बाजारों में बेचने के सही अवसर मिले।

इस प्रकार जी-77 को ब्रेटन-वुड्स संस्थानों की प्रतिक्रिया कहा जा सकता है।



Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here